दिनाँक 01-04-2023 को चैत्र के यज्ञ की मीटिंग पर हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सजनों चैत्र का यज्ञ बहुत अच्छा और प्रेम से सम्पन्न हुआ, इसकी आप सबको बहुत-बहुत बधाई हो। प्रत्येक सजन ने अपना कार्य कुशलता से सम्भाला व अपनी ड्यूटी को नीति-संगत निभाया इसीलिए कहीं से कोई शिकायत नहीं आई। इसी तरह अब इस जीवन यात्रा के दौरान परमपद पाने हेतु जो स्वयं में स्वाभाविक बदलाव लाना है, उस कार्य को कुशलता से युक्ति-संगत सम्पन्न कर अपने मन-वचन-कर्म को आत्मज्ञान अनुसार ढाल लो। जानो ऐसा करना अति आवश्यक है क्योंकि तभी आप आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हुए अपने जन्म की बाज़ी जीत सकते हो। इस सन्दर्भ में सजनों इस चैत्र के यज्ञ की मीटिंग में जो भी वचन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार सुनो उन सबको ध्यानपूर्वक समझना क्योंकि यही युक्ति विजय-पथ पर प्रशस्त होने का अमोघ साधन है। अतः सफलता प्राप्त करने हेतु आज की सारी बातचीत गहराई से समझना और आचार-व्यवहार में लाना। जानो यदि हम सत्संगी सजन ऐसा सुनिश्चित रूप से कर लेते हैं तो यक़ीनन हमारे परिवारजन चाहे वे बच्चे हैं, प्रौढ़ हैं, वृद्ध हैं, उन पर इसका सकारात्मक प्रभाव जाएगा और उनके मन में भी स्वयं में वांछित बदलाव लाने का उत्साह पैदा होगा। ऐसा करने हेतु सर्वप्रथम हमें अपने आचार-व्यवहार द्वारा उनके सामने सज्जनता से विचरने का आदर्श स्थापित करना होगा तभी हम अपनी कुल को परमार्थ की राह पर चलने हेतु बाध्य कर पाएँगे। जानो यही सजन भाव पर खड़े रहने की बात है। इस तरह आप एकता, एक अवस्था पर डटे रह अपनी शक्तियों का समुचित ढंग से प्रयोग करने के योग्य बन जीवन सफल बना पाओगे। अब सतर्क हो जाओ और ध्यान से एक-एक शब्द को सुनना क्योंकि अब जो भजन/कीर्तन के रूप में बुलने जा रहा है, वैसा करना कोई बड़ी बात नहीं है। चाहे यह बात अति सूक्ष्म है पर इसका परिणाम बहुत सकारात्मक है। इसलिए सब अफुर व सतर्क हो जाओ और जैसे-जैसे स्टेज पर बुले, वैसे-वैसे समझते हुए बोलो। इस तरह अपने अन्दर ऐसा सद्‌भाव पैदा करो कि आपके लिए एक अच्छा इन्सान बनकर निष्पाप जीवन व्यतीत करते हुए सच्चे घर पहुँच विश्राम पाना सहज हो जाए। अब ध्यान से सुनो व बोलोः-

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

इस भजन के अन्तर्गत सजनों सच्चे पातशाह जी, आज की स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए, अत्यन्त ही सरलता व स्पष्टता से हर मानव को आगाह करते हुए कह रहे हैं कि हे मानव ! अब आपके पास आत्मपद पाने का मौका है। सो अगर सुनिश्चित रूप से ऐसा करना चाहते हो तो बगैर मनमत लगाए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की सत्-शास्त्र में विदित युक्ति प्रवान करो। इस तरह जो कहा है वही करना आरम्भ कर दो। जानो ऐसा करने से यानि कहना मानने से सर्वमहान दाता का संग प्राप्त करना सहज हो जाएगा और जीवन का बिगड़ा कारज सँवर जाएगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने आप को भली-भान्ति समझाओ ताकि आपके जीवन का परिणाम सकारात्मक निकले। इस सन्दर्भ में अपने ऊपर परमात्मा की अपार कृपा समझो और उस कृपा प्राप्ति का योग्य पात्र बनने के लिए इन

सद्-विचारों को जीवन में उतारकर आगे बढ़ना सुनिश्चित करो। यहाँ जान लो कि हम कुरस्ते पड़े हुओं को सीधे रास्ते पर लाने में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सर्व समर्थ हैं। अतः उन दाता की शरण में आओ और अपने सजन आप बन जाओ। इस परिप्रेक्ष्य में किसी व्यक्ति विशेष के पीछे मत भागो अपितु सजन श्री शहनशाह महाबीर जी जैसे हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं और परमपद प्राप्ति के योग्य बना रहे हैं, उसी तरह यानि वैसा ही करते जाओ। कहने का आशय यह है कि इस सत्य को स्वीकार लो कि अब तक जो भी ज्ञान मैंने इधर-उधर से अपनाया, उस ज्ञान के प्रयोग द्वारा मैं आत्मपद की प्राप्ति नहीं कर पाया। अतः अब मेरे लिए आवश्यक हो जाता है कि अपने जीवन का रास्ता सुगम बनाने के लिए मैं उनके शास्त्र विहित वचनों को प्रवान करना आरम्भ कर दूँ और इस तरह सर्व-विजयी हो जाऊँ।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों किसी विध् भी उस शहनशाह के वचनों की पालना के प्रति कमज़ोर मत पड़ो। इस तरह अपने जीवन का सहजता व सरलता से उद्धार कर लो। आत्मोद्धार हेतु हम तो यही कहेंगे कि अपनी बुद्धि को पलटा खवा लो और इसके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के विचारों को आत्मसात करने के प्रति सजग रहो यानि आत्म-नियन्त्रण रखो ताकि दिनचर्या के दौरान हमसे कुछ भी ऐसा न हो जो उनके वचनों के विरुद्ध हो। जानो यदि परिस्थितिवश इस कथन के विपरीत हमसे शास्त्र विरुद्ध कुछ ऐसा- वैसा हो जाता है तो हम कभी भी अपनी मंजिल को नहीं पा सकते। अब यह खुद आप पर ही निर्भर करता है कि आप क्या करना चाहते हो? इस सन्दर्भ में याद रखो - शास्त्र तो यही कह रहा है कि अपने सजन बनो और सगी-साथियों के प्रति भी सजनता दिखाओ। इस तरह सबको सद्मार्ग पर चढ़ाने का युक्ति-संगत प्रयास करो और यश कमाओ। अब ध्यान से सुनोः-

श्री साजन जी के मुख के शब्द

शब्दः- सजनों सजन शब्द चलाओ जितो मृत लोक नूं

सजनों जितो मृत लोक नूं ।

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या?

सजन सदो सजन सदावो, सजन सदो सजन सदावोच

सजन ही पहरेवा पाओ, सजन करो वर्त-वर्ताओ

आप वर्तो सजनां नूं वर्तना सिखा दीजिए

एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए -

क्या?

जिव्हा स्वतन्त्र संकल्प स्वच्छ, जिव्हा स्वतन्त्र संकल्प स्वच्छ

इक निगाह इक दृष्टि दिखाओ, इक निगाह इक दृष्टि दिखाओ

आप देखो ते सजनां नूं दिखा दीजिए

एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या?

पकड़ो सजनों आप नूं, खालस सोना हो जाओ पने प्रकाश नूं पाओ

आप पाओ ते सजनां नूं प्रकाश होने दा तरीका समझा दीजिए

एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या?

सजनों कदम-कदम ते विचार होवे, विचार नाल सजनों प्यार होवे दिव्य दृष्टि दिखाओ

आप देखो ते सजनां नूं देखना सिखा दीजिए

एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या?

सजन शब्द चलाओ ते चलदे जाओ

सजनो ऐसा पराक्रम दिखाओ, परउपकारी नाम कहाओ

आप उपकार करो ते सजना नूं उपकार करना सिखा दीजिए

एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

शब्दः- सजनों एहो तरीका है जे मेल खावने दा,

फिर जीवन अपना बना लीजिए।

ज्योति स्वरूप और पारब्रह्म परमेश्वर,

फिर रौशन अपना नाम कीजिए।।

जब दो सत्संगी सजन आपस में मिलें, तो उनको एक दूसरे से सतवस्तु की रामसत इस तरह पूछनी चाहिएः-

हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

गृहस्थ धर्म को आप ठीक निभा रहे होंगे

एहो सजनां कोलो पुछ लीजियो

इस बात दा उत्तर सानुं लिया दीजियो

यह है रूड़दे हुए सजन को पकड़ लेना

सजनों आप नूं पकडो ते सजनां नूं पकडना सिखा दीजियो

एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

हमारा पैगाम ले लीजियो, एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

सच्चाई-धर्म के रास्ते पर आप ठीक चल रहे होंगे

एहो सजनां कोलो पुछ लीजियो

इस बात दा उत्तर सानुं लिया दीजियो

यह है गिरते हुए सजन को खडा करना

आप खडा होना ते सजनां नूं खडा होना सिखा दीजियो

एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

हमारा पैगाम ले लीजियो, एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियों

नाम-ध्यान में आप महाराज के साथ जुडे हुए होंगे

एहो सजनां कोलो पुछ लीजियो

इस बात दा उत्तर सानुं लिया दीजियो

यह है रोते हुए सजन को हसा देना

आप हस्सो ते सजनां नूं हसना सिखा दीजियो

एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

हमारा पैगाम ले लीजियो, एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

भक्ति-शक्ति आप ने धारण की हुई होगी

एहो सजनां कोलो पुछ लीजियो

इस बात दा उत्तर सानुं लिया दीजियो

यह है सोये हुए सजन को जगा देना

आप जागो ते सजनां नूं जगा दीजियो

एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

हमारा पैगाम ले लीजियो, एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

यश और कीर्त्ति में फ़र्क तो नहीं पड़ रहा होगा

एहो सजनां कोलो पुछ लीजियो

इस बात दा उत्तर सानुं लिया दीजियो

यह है कुरस्ते पडे सजन को रास्ते पर लाना

धर्म दे रस्ते ते आप चलो ते सजनां नूं चलना सिखा दीजियो

एहो पैगाम सजनां नूं फरमा दीजियो

शब्दः- एहो दृढ विश्वास है, एहो तो इतिहास है

एहो तो यादाश्त है, उस शहनशाह दाते दी एहो तो करामात है

सत सत बोलना सीखो, सजनों सत सत करो प्रवान

सत है गुरू, सत नाम सत ध्यान लाणा सीखो

सजनों सत सत बडा है महान

सत सत वर्त्त वर्ताओ करना सीखो

सजनो सत सत करो प्रवान

सत सत बोलना सीखो सजनों सत आप पढो ते सजनां नूं पढाओ

इसे शब्द नाल हिवे विश्राम

सजनों यह अति सूक्ष्म और सहज रास्ता है जिस पर स्थिरता से आगे बढ़ते हुए हम निर्विकार अवस्था को सहज जी प्राप्त कर सकते हैं। आशय यह है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों अनुसार सकारात्मकता अपनाना हमारे लिए लाभकारी है। सो अगर खुद से प्यार है तो इन दोनों पैगामों में वर्णित, शब्द विचारों अनुरूप अपना स्वाभाविक रूप ढालने में विलम्ब मत करो। इस विषय में जहाँ भी, कहीं भी खुद में त्रुटि नज़र आए तो उसे सहर्ष स्वीकारो और फिर वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए खुद को साधो। याद रखो अभी तक जो छल-कपट व झूठ का चलन अपनाया हुआ है, हमें हर हाल में उससे ऊपर उठना ही होगा और जो सत्यज्ञान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है उसको परिपूर्णतया धारणकर व्यवहार में लाने के योग्य बनना होगा। इस तरह समस्त विकार-वृत्तियों पर फ़तह पा हमें अपने ऊपर आप उपकार करना होगा। जानो यह बुराई को त्यागकर श्रेष्ठता को प्राप्त होने की सुन्दर व महान बात है। इसीलिए आपको गहराई से कुदरती वाणी व युक्ति को समझने की आवश्यकता है। याद रखो यदि आप पहले पैगाम में बताई युक्ति अनुसार खुद को सत्य रूप से मानव धर्म अनुकूल ढाल लेते हो तो फिर आप दूसरे पैगाम अनुरूप अपने सम्पर्क में आने वाले हर इन्सान को मानसिक रूप से इस श्रेष्ठता को प्राप्त करने के प्रति तैयार कर सकते हो। यह है सजनों अपना व सबका उपकार। यह परोपकार प्रवृत्ति में ढलने की शुभ बात है। यहाँ याद रखो कि जो इन्सान इस प्रकार परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाता है, उसका भाव-स्वभाव सत्यता का प्रतीक बन जाता है। फिर जब यही सत्य पूरी तरह से उसके भाव-स्वभाव यानि मन-वचन-कर्म में उतर जाता है तो वह सतवादी इन्सान बन जाता है। सतवादी बनना अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप अनुकूल भाव-स्वभाव अपनाने जैसी शुभ बात है। सजनों इसी में अपनी उन्नति मानो। जीवन के इस उन्नति-पथ पर आगे बढ़ने हेतु अपने पर थोड़ा अंकुश लगाओ ताकि नकारात्मकता जड़ से ही खत्म हो जाए और हृदय में सकारात्मक वातावरण के बनते ही आप हर्षा उठो। जानो यही सबसे उत्तम अवस्था है। सो सजनों मानो कि जो इन पैगामों में कहा गया है उस अनुकूल खुद को

ढालना कोई कठिन बात नहीं है क्योंकि परमार्थ की ओर आगे बढ़ने हेतु शास्त्र-विहित उसूलों के अनुकूल यह नीति-सम्मत मार्ग है। अतः मानो कि शास्त्र ही हमारे मन-वचन-कर्म को विशुद्धता में साधे रखने का सर्वोत्तम आधार है। इसी पुरुषार्थ द्वारा हमारा अन्तःकरण सदा विशुद्धता को प्राप्त रह सकता है और हमारा ख़्याल-ध्यान बैहरुनी संसार की तरफ से मुख मोड़कर, अन्तर्मन में व्याप्त ईश्वर की इलाही सूरत की ओर आकर्षित हो सकता है। यह इलाही सूरत फिर उसके मन को भाने लगती है। ऐसा होने पर मान लेना चाहिए कि अब मैं जीवन के सद्मार्ग पर बने रहने के काबिल बन गया हूँ और बिना किसी लोभ-लालच या मोह के निष्पाप जीवन जी सकता हूँ यानि किसी प्रकार भी स्वाभाविक रूप से कमज़ोर नहीं पड़ सकता। ऐसा होने पर लाभ ही लाभ होता है क्योंकि इससे अनावश्यक इच्छाएँ और उनको प्राप्त करने के प्रति ख़्याल की दौड़ (जो कि बुद्धिहीनता की निशानी होती है) समाप्त हो जाती है। इसी बुद्धिहीनता के कारण यानि इच्छाओं की पूर्ति के बोझ तले दबा हुआ ख़्याल, ध्यान वल स्थित नहीं हो पाता। सजनों जब कोई भी इन्सान इस प्रकार ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखने में असक्षम हो जाता है तो उसको समझ लेना चाहिए कि वह जीवन की बाज़ी सुनिश्चित रूप से हारने वाला है और इसी कारण उसको तीनों लोकों से अपयश प्राप्त होने वाला है। ऐसे इन्सान को फिर भिन्न-भिन्न प्रकार की त्रास सहने के लिए तैयार रहना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि जो भी मेरे साथ हुआ या हो रहा है या आगे होगा, उसमें किसी अन्य का कोई दोष नहीं है यानि सारा दोष मेरा ही है क्योंकि मैं ही समय अनुसार शब्द ब्रह्म विचारों को नहीं पकड़ पाया और सांसारिकता से बोझिल होने के कारण मेरे अन्दर अभी भी उनको धारणे की कोई इच्छा पैदा नहीं हो रही है।

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि जब मनमत के अनुसार जीवन चलता है तो बुद्धि मनुराज में जा गिरती है। ऐसा होने पर हम अपने ही बुद्धिबल का अपने ही हितों को साधने के निमित्त उचित ढंग से प्रयोग करने में असक्षम हो जाते हैं। यह अपने आप में अति घातक बीमारी होती है जो हम अपने लिए आप ही खरीदते हैं। यह बीमारी दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती है और किसी के पास इसका उपचार या औषधि नहीं मिलती। इस सन्दर्भ में जानो कि इसकी औषधि केवल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास है और उन्होंने वह हमें नाम अक्षर के रूप में बक्षी हुई है। उन द्वारा प्रदत्त नाम अक्षर को विधिवत् चलाते हुए हम सहजता से अपने वास्तविक स्वरूप को जान व पहचान सकते हैं और यथार्थता से

जीवन जीने के योग्य बन हर तरह से खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि तब हम अपनी अजर-अमर आत्मा यानि यथार्थ स्वरूप की पहचान कर अमीरों के अमीर हो जाते हैं। तब हमारी बुद्धि को कोई बाह्य परिस्थिति प्रभावित नहीं कर पाती क्योंकि हम अपनी विवेकशक्ति का कुशलता से प्रयोग करने में सक्षम हो जाते हैं। इसी सक्षमता के कारणवश असत्य हमारे अन्दर प्रवेश नहीं कर पाता। जब असत्य प्रवेश ही नहीं कर पाता तो हमारा हृदय सत्य से सदा भरपूर रहता है और हम अपने धर्म पर खड़े हो जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सत्य मानव के यथार्थ धर्म का परिचायक है। तभी तो ऐसा मानव सत्यज्ञान अनुरूप व धर्मानुकूल भाव-स्वभाव अपनाने में सफल हो जाता है और उसमें सकारात्मकता व सम्पूर्ण गुणवत्ता आ जाती है। इस तरह वह मानव सफल हो जाता है और उसके अन्दर सतवस्तु का राज स्वयंमेव स्थापित हो जाता है। फिर वह शहनशाही ठाठ से जगत के उद्धार हेतु अपने कर्त्तव्यों का समयबद्ध निर्वहन करते हुए अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त होता है।

इस सन्दर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपने आप को भाग्यशाली समझो कि आपको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का 'द्वारा' व 'सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ' मिला। सो सजनों इस कुदरती ग्रन्थ में विदित सत्यज्ञान के विपरीत कुछ भी न करो। जानो ऐसा करने से चित्त प्रसन्न हो जाएगा और सर्गुण निर्गुण दोनो अवस्थाओं में विचरते हुए अच्छा लगेगा। ऐसा ही हो इस हेतु जो द्वारे की क्रमवार नीति है, उसे बुराई से अच्छाई यानि यथार्थता की ओर बढ़ने की अनमोल युक्ति मानो। इस युक्ति का अनुशीलन करते हुए स्वयं पर नज़र रखो और इस तरह गुणवान बन जाओ। गुणवान बन गए तो जीवन का हर कदम मज़बूती से उठा पाओगे और युक्ति-संगत आगे बढ़ते हुए नव-निर्माण करने में सफल हो जाओगे। यहाँ हम पूछते हैं कि क्या आप सब इस प्रकार इस एक वर्ष के अन्दर परिपूर्णतया

श्रेष्ठ मानव बनने के लिए तैयार हो जी?

'हाँ जी'।

तो फिर ध्यान से क्रमवार वर्णित उस युक्ति के विषय में सुनोः-

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हमारी पढ़ाई

चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित पैगाम वाले कीर्त्तनों की वाणी पर अमल करते हुए सजनों ने अन्दरूनी वृत्ति और बैहरूनी वृत्ति दोनों का रोना-झुखना बंद करना है अर्थात् जिह्वा स्वतन्त्र और अफुर अवस्था को धारण करना है।

सावन की मीटिंग से लेकर कार्तिक की मीटिंग तक

चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक का सबक यादगीरी में रखते हुए प्रत्येक सजन ने ग्रन्थ में से कलुकाल वाले कीर्तन तरतीब से पढ़ने आरम्भ करके कार्तिक की मीटिंग तक सारे कीर्तन पढ़कर अर्थ सहित समझ लेने हैं। इसका मुख्य उद्देश्य स्वभावों में से कलुकाल हटा 'हौं-मैं'' को मिटाकर कार्तिक की मीटिंग से पहले घर सतयुग बना लेना है। इसके साथ ही विराट दृष्टि पर खड़े होकर ब्रह्म-वृत्ति को ठहरा लेना है। कैसेः- जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ और निगाह कंचन करके।

इसके अतिरिक्त मीटिंग वाले दिन पढे गए बुजुर्गों, बच्चों और गृहस्थ के फर्ज-अदा के पर्चों के अनुरूप अपनी जाँचना कर लेनी हैं और अपने आप को गृहस्थ-आश्रम ठीक ढंग से चलाने के लिए व हर एक के प्रति अपना फर्ज़-अदा हँसकर करने के लिए कहना व समझाना है।

कार्तिक की मीटिंग से लेकर गदे के यज्ञ की मीटिंग तक

अब तक पढाए गए सबक के बारे में अपनी जाँचना-तुलना कर उस पर परिपक्वता से तैयार होने के साथ-साथ विचार शब्द तथा समभाव-समदृष्टि को परिपक्वता से ठहरा लेना है।

गदे की मीटिंग से लेकर चैत्र के यज्ञ की मीटिंग तक

इस अंतराल में चैत्र के यज्ञ से लेकर अब तक मिलें सबक के विषय में दोहराई कर अपनी परिपक्वता व कमज़ोरी की जाँचना कर अपना नतीजा परख लेना है। इस प्रकार अपनी जो भी कमज़ोरियाँ समझ में आए उन्हें पौने दो महीने किए जाने वाले महामन्त्र के गुप्त जाप द्वारा चैत्र के यज्ञ तक दूर कर लेना है। इस प्रकार चैत्र के यज्ञ पर समभाव-समदृष्टि के सबक पर परिपक्वता से पूर्णतया खड़े होकर आना है।

सजनों पूरे साल उन्नति-पथ पर प्रशस्त होने की क्रमवार बस इतनी सी ही परियोजना है। क्या इसमें कोई मुश्किल है?

'नहीं जी'।

तो फिर इतने पोथे पढने की बजाए या बहुत कुछ समझने की बजाए, इस तरह अपने आप को समयानुकूल ढालते जाना। यदि ऐसा कर लिया तो सुनिश्चित रूप से चैत्र के यज्ञ पर आपका फ़र्स्ट का नतीजा आएगा। आशय यह है कि जब स्वयं पर काम करना आरम्भ कर दोगे तो आपको अच्छा लगेगा और आपके मन में आत्मोद्धार व आत्म-सुधार के प्रति प्रबल इच्छा पैदा होगी। इसलिए कह रहे हैं कि अपने सजन आप बन जाओ। अन्य शब्दों में इतने निष्ठुर मत बनो कि जीवन का अन्त परिणाम दुःखदायी साबित हो क्योंकि तब बहुत बुरा लगेगा। ऐसा होने पर तब परमात्मा की याद आएगी पर 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' क्योंकि तब आपके अन्दर कोई सद्‌गुण बचेगा ही नहीं। ऐसा होने पर दुर्गति तो प्राप्त होगी ही होगी। ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि शास्त्र अनुकूल यदि अभी भी अपने आप को ढाल लेते हो तो सद्‌गति प्राप्त हो सकती है। तो क्या सद्‌गति प्राप्त करना चाहते हो?

'हाँ जी'।

तो फिर अपने साथ वैर कमाना छोड़ दो और अपने सजन आप बनकर सजनता के प्रतीक कहलाओ और श्रेष्ठ मानवों की गणना में आ, अपने घर पहुँच विश्राम को पाओ। यही आपका इस साल का लक्ष्य है।

नये साल का नया लक्ष्य है

आगे बढ़ने और बढ़ाने का।

सतवस्तु की संस्कृति को

जन-जन तक पहुँचाने का।।

अन्त में सब मिलकर बोलोः-

चमत्कार एक है, चमत्कार एक है

एक ही विशेष, सजनों एक है

एक ही विशेष, सजनों एक है

हर अन्दर प्रवेश, सजनों एक है

हर अन्दर प्रवेश, सजनों एक है

चमत्कार एक है, चमत्कार एक है

इस सत्य को धारणकर अपना उद्धार कर लो। इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मज्ञान का अनुसरण करो और सजनता के प्रतीक बन जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।